रामवृक्ष बेनीपुरी

साहस और उमंग की प्रतिमूर्ति, संघर्षशील, ग्राम्य लोकजीवन के मसीहा साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म 23 दिसंबर, 1902 में बिहार प्रांत के मुजफ्फरपुर, बेनीपुर ग्राम में एक भूमिहर ब्राह्मण परिवार हुआ | उनकी प्रारंभिक शिक्षा बेनीपुर में हुई | जब वे मैट्रिक कक्षा में पढ़ रहे थे वर्ष 1920 के गांधीजी के नेतृत्व में चल रहे असहयोग आदोलन में कूद पड़े | इस कारण उनका विद्यालय की शिक्षा प्राप्ति का क्रम टूट गया | वे स्वतंत्र रूप से स्वाध्ययन करने लगे | नौ बार जेल जाने के कारण वे लगभग 8 वर्ष जेल में रहे | जब भी वे जेल से बाहर आते तो उनके हाथ में दो-चार ग्रंथों की पाण्डुलिपियां अवश्य होती थीं |

एक बार दिनकर ने कहा था, 'स्वर्गीय पंडित रामवृक्ष बेनीपुरी केवल साहित्यकार नहीं थे, उनके भीतर केवल वही आग नहीं थी, जो कलम से निकलकर साहित्य बन जाती है वे उस आग के भी धनी थे, जो राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों को जन्म देती है, जो परंपराओं को तोड़ती है और मूल्यों पर प्रहार करती है | जो चिंतन को निर्भीक एवं कर्म को तेज बनाती है | बेनीपुरी जी के भीतर बेचैन कवि, बेचैन चिंतक, बेचैन क्रांतिकारी और निर्भीक योद्धा सभी एक साथ निवास करते थे |'

पत्रकार और साहित्यकार के रूप में बेनीपुरी ने विशेष ख्याति अर्जित की थी | उन्होंने विभिन्न समयों पर एक दर्जन पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया | उन्होंने इस कथन को गलत सिद्ध कर दिया कि एक अच्छा पत्रकार एक अच्छा साहित्यकार नहीं हो सकता | उन्होंने तरूण भारत, किसान मित्र, गोलमाल, बालक, युवक, कैदी, लोकसंग्रह, कर्ममीर, योगी, जनता, तूफान, हिमालय, जनवाणी, चुन्नू-मुन्नू तथा नयी धरा आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया |

उनकी प्रमुख रचनाएं हैं:-

कहानी संग्रह - चिता के फूल, माटी की मूरतें

उपन्यास - पतितों के देश में, कैदी की पत्नी

ललित निबंध - सतरंगा इन्द्रधनुष

स्मृतिचित्र - गांधीनामा

नाटक - सीता की मां, संघमित्रा, अमर ज्योति, तथागत, सिंहल - विजय, शकुंतला, रामराज्य, नेत्रदान, गांव का देवता, नया समाज और विजेता

निबंध - हवा पर, नयी नारी, वन्दे वाणी विनायकों, अत्र-तत्र

आत्मकथात्मक संस्मरण - मुझे याद है, जंजीरें और दीवारें, कुछ मैं कुछ वे

यात्रा साहित्य - पैरों में पंख बांधकर, उड़ते चलो उड़ते चलो

अन्य - विद्यापति पदावली, बिहारी सतसई, बाल-साहित्य की दर्जनों पुस्तकें |

सम्मान/पुरस्कार

वे 1957 में बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए | उन्होंने अनेक संस्थाओं का प्रतिनिधित्व भी किया | वे बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक भी रहे / उनके सम्मान में बिहार सरकार द्वारा वार्षिक अखिल भारतीय रामवृक्ष बेनीपुरी पुरस्कार दिया जाता है |

6 सितंबर, 1968 को मुजफ्फरपुर, बिहार में उनका देहांत हुआ |